मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय :

मैथिली शरण गुप्त का जन्म चिरगाँव झाँसी में सन् 1886 में हुआ था । उनकी पढ़ाई घर पर ही हुई । उन्होंने हिन्दी के अलावा संस्कृत, बंगला, मराठी और अँग्रेजी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । बचपन से ही वे कविता लिखने लगे थे । अपने जीवन काल में ही वे राष्ट्रकवि के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

गुप्तजी का परिवार रामभक्त था । उन्होंने भारतीय जीवन के आदर्श, इतिहास और संस्कृति को अपने काव्य का आदर्श बनाया । स्नेह, प्रेम, दया, उदारता आदि मानवीय भावों को भी साहित्य के माध्यम से उजागर किया ।

यह कविता :

इस कविता में मनुष्य को महान बनने की प्रेरणा दी गई है । कवि कहते हैं जिसने इस धरा पर जन्म लिया है, एक न एक दिन अवश्य मरेगा । इसलिए हमें कभी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए । हम ऐसे मरे कि मरने के बाद भी अमर हो जाएँ । यदि हम जीवन भर सत्कर्म नहीं करेंगे तो हमें अच्छी मृत्यु नहीं मिलेगी अर्थात् मरने के बाद कोई याद नहीं रखेगा । जो व्यक्ति दूसरों के काम आता है वह कभी मरता नहीं है । क्योंकि वह कभी भी अपने लिए नहीं जीता है । पशु जिस प्रकार अपने आप मरते रहते हैं उसी तरह की प्रवृत्ति मनुष्य में भी कई बार दिखाई देती है जो ठीक नहीं है । मनुष्य को तो मनुष्य की मदद करने में प्राण दे देना चाहिए ।

संपत्ति के लोभ में पड़कर हमें गर्व से नहीं इठलाना चाहिए । कुछ अपने मित्र और परिवार आदि लोगों को देखकर भी अपने को बलवान नहीं मानना चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई भी अनाथ या गरीब नहीं होता । यहाँ कोई भी अनाथ नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर

जो तीनों लोकों के नाथ हैं, वे सदा सबके साथ रहते हैं । क्योंकि ईश्वर दीनबंधु हैं । गरीबों पर दया करने वाले भी हैं परम दयालु हैं । विशाल हाथ वाले हैं अर्थात् वे सबकी मदद करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं । जो अधीर होकर अहंकारी बन जाते हैं वे तो सच में भाग्यहीन हैं । मनुष्य तो वही है जो मनुष्य की सेवा करे और उसके लिए मरे । मनुष्य के लिए प्रत्येक मनुष्य बंधु है, परम मित्र है । इसे हमे समझना होगा । यही हमारा विवेक है । एक ही भगवान हम सब के पिता हैं । वे पुरातन प्रसिद्ध पुरुष हैं । वे ईश्वर हैं । यह तो सत्य है कि हमें अपने कर्मों के अनुरुप फल भोगना होता है । इसलिए बाहरी तौर पर हम भले ही अलग अलग दिखाई देते हैं पर अंदर से एक हैं । हम में अन्तर की एकता है । वेद ऐसा ही कहते हैं । समाज में अनर्थ तब होता है जब मनुष्य दूसरे को अपना बंधु नहीं मानता है । मनुष्य को ही मनुष्य की पीड़ा को दूर करना होगा । इसलिए सही माईने में मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है ।

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परंतु यों करो कि याद जो करें सभी ।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरानहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त सें,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।
अतीव भाग्यहीन हैं अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,

पुराण पुरुष स्वयं पिता प्रसिद्ध एक है ।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं ।

पंरतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।

अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे;

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

शब्दार्थ :

मर्त्य – मरणशील, पशुप्रवृत्ति – पशु जैसा स्वभाव, मदांध – जो गर्व से अंधा हो । चित्त – मन, स्वयंभू – परमात्मा / स्वयं उत्पन्न होनेवाला, अंतरैक्य – आत्मा की एकता / अंत:करण की एकता, प्रमाणभूत – साक्षी

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कविने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?

(ख) यहाँ कोई अनाथ नहीं है ऐसा कविने क्यों कहा है ?

(ग) 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) 'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,

पुराण पुरुष स्वयंभू-पिता प्रसिद्ध एक है ।।

(ख) रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में ।

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :

(क) कवि किससे न डरने की बात कर रहे हैं ?

(ख) कवि कैसी मृत्यु को प्राप्त करने का परामर्श दे रहे हैं ?

(ग) कवि मनुष्य की किस पशुप्रवृत्ति की बात कर रहे हैं ?

(घ) मनुष्य क्या पाकर मदांध हो जाता है ?

(ङ) सनाथ होने का घमण्ड क्यों नहीं करना चाहिए ?

(च) भाग्यहीन कौन है ?

(छ) संसार में मनुष्य का बंधु कौन है ?

(ज) पुराण पुरुष हमारे क्या हैं ?

(झ) वेद किसका प्रमाण देते हैं ?

(ञ) कौन बंधु की व्यथा हरण कर सकता है ?

भाषा-ज्ञान

1. उपयुक्त विभक्ति-चिह्नों से शून्य स्थान भरिए :

(से, में, के, का, को, के लिए)

(क) फलानुसार कर्म ——— अवश्य वाह्य भेद हैं ।

(ख) वेद अंतरैक्य ——— प्रमाण हैं ।

(ग) वही मनुष्य है जो मनुष्य ——— मरे ।

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

प्रवृत्ति, अंतरिक्ष, मृत्यु, विचार, व्यथा, अनर्थ ।

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाइए :

विवेक, प्रवृत्ति, मर्त्य, बंधु, व्यथा ।

■ ■ ■